निराला की कविताओं में प्रगतिवादी-चेतना का स्वरूप

(हिंदी प्रतिष्ठा बी.ए. द्वितीय वर्ष)

(डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर।)

निराला छायावाद के प्रमुख चार स्तंभ कवियों में से एक हैं। सन 1936 ई. के आसपास हिंदी साहित्य में प्रगतिशील चेतना का स्वर सुनाई देने लगा। कवि निराला भी इस समय तक आते-आते अपनी कविताओं में प्रगतिवादी चेतना की अभिव्यक्ति करने लगे। शोषकों के विरुद्ध उनका स्वर स्पष्ट सुनाई देता है। उन्होंने पीड़ितों, वंचितों, शोषितों की पीड़ा को पहचाना और उनके हित में अपना स्वर बुलंद किया। गुलाब और कुकुरमुत्ते के प्रतीक के माध्यम से शोषकों को फटकार लगाकर, शोषितों के ज़ख्मों पर मरहम लगाते हैं। साथ ही पत्थर तोड़ती हुई युवती का चित्रण करके छायावाद की वायवीय दुनिया से प्रगतिवाद की यथार्थ दुनिया में उतरकर काव्यरचना करने लगे। प्रगतिशील चेतना संपन्न काव्य रचकर निराला ने अपनी सामाजिक प्रतिबध्दता को अभिव्यक्ति दी। छायावादी काव्य कल्पना जगत की भूमि पर लिखी जा रही थी तो प्रगतिशील चेतना संपन्न प्रगतिवादी काव्य सामाजिक यथार्थ की भूमि पर लिखी जाने लगी। निराला ने अपनी कविताओं को समाज से जोड़ा। हिंदी काव्य को प्रगतिशील तत्व संपन्न बनाने में कवि निराला ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्वानों ने उन्हें हिंदी का पहला प्रगतिवादी कवि माना है। उन्होंने प्रगतिशील चेतना की कविताएँ लिखकर साहित्य को जनजीवन से पूर्णतः जोड़ दिया। अपनी इस काव्ययात्रा में निरंतर आगे बढते रहे और अपने परवर्ती काव्यों में उन्होंने बहुत खुलकर प्रगतिशील चेतना को अभिव्यक्ति दी।

निराला की प्रगतिशील सामाजिक कविताओं में 'अनामिका' की 'वह तोड़ती पत्थर' 'बेला' की कुछ गज़लें, उनकी लम्बी कविता 'कुकुरमुत्ता' इत्यादि में सामाजिक स्वरूप स्पष्ट रूप में चित्रित हुआ है। इस दृष्टि से 'वह तोड़ती पत्थर' सामाजिक वर्गविभेद को बिल्कुल स्पष्ट रूप में उपस्थित करती है। इस कविता में समाजवादी विचारधारा को पूर्णतः उपस्थित किया गया है। कविता का लक्ष्य है इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती हुई गरीब मजदूरनी के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विषमता का चित्रण।

-"वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर

नहीं छायादार पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार

देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं।"

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में समाज के एक दृश्य के माध्यम से आर्थिक-सामाजिक विषमता को चित्रित किया गया है। निराला ने प्रगतिशील चेतना को पत्थर तोड़नेवाली युवती के माध्यम से जिस सजीवता से व्यक्त किया है वह सामाजिक-आर्थिक विषमता का साक्षात उदाहरण है। सामान्य जन-जीवन को इस कविता के माध्यम से कवि

समाजवादी विचारधारा से परिचित करवाते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता निराला की विचारधारा को सामाजिक कर्म के रूप में प्रस्तुत करती है। 'बेला' की कुछ गज़लों में भी कवि निराला ने सामाजिक प्रगतिशीलता को व्यक्त किया है।–

"भेद खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है।

देश को मिल जाए वो पूँजी तुम्हारी मिल में है।"

सदियों से सामाजिक विषमता के कारण एक वर्ग के पास कुछ भी नहीं है तो दूसरा वर्ग सारी पूँजी अपनी तिजोरी में भरकर बैठा था। प्रगतिशील चेतना को अपनी रचनाओं में प्रकट कर उन्होंने सामाजिक विषमता को मिटाने का प्रयास किया है। कवि को विश्वास है कि कविता में प्रगतिशील चेतना की अभिव्यक्ति के माध्यम से एक नवीन समाज की स्थापना हो सकती है। आर्थिक-सामाजिक विषमता के कारण साधनविहीन लोग कठिनाइयों के मध्य जीवन-यापन को विवश रहते हैं। कवि निराला ने 'बेला' में "जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ, आओ आओ" के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक विषमता को चित्रित किया है। उन्होंने पूरी निष्ठा से सामाजिक विषमता के चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने किसानों, मजदूरों के संघर्ष, उनकी कठिनाइयों से भरी दिनचर्या, कठोर परिश्रम के बावजूद पारिश्रमिक नहीं मिलना, शोषकों के अत्याचार, पूंजीपतियों का मनमाना व्यवहार इत्यादि का चित्रण निराला की सामाजिक दृष्टि और प्रगतिशील चेतना का प्रमाण है। डॉ. श्यामसुंदर घोष ने लिखा है कि वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष प्रेमचंद की तरह निराला में भी मिलता है। वर्ग चेतना की दृष्टि से 'नये पत्ते', कविता, 'थोड़ों के पेट में बहुतों को आना पड़ा' ध्यान देने योग्य है। इसी प्रकार 'कुकुरमुत्ता' मूलतः वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष का काव्य है। 'नए पत्ते' की कविताओं में जनता के विविध शोषकों का रूप खुलकर प्रकट हुआ है। 'डिप्टी साहब आए' कविता में जनता को प्रचलित बेगारी और मुफ्तखोरी का जमकर विरोध करते हुए दिखलाया गया है। सामाजिक प्रगतिशीलता निराला की कविताओं की अन्यतम विशेषता है। सर्वहारा पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध सशक्त स्वर अपनी कविताओं के माध्यम से निराला बुलंद करते हैं।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समानता के साथ-साथ लैंगिक समानता का भी समर्थन अपनी कविताओं के माध्यम से करते हैं। निराला का समस्त साहित्य नारी की स्वतंत्रता, उसके अधिकारों का समर्थक है। उन्होंने प्रगतिशील चेतना सम्पन्न दृष्टि से ऐसी कविताएँ लिखी हैं, जो नारी को समाज में पुरुषों के समकक्ष खड़ा करती है। 'वह तोड़ती पत्थर' 'वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी' तथा 'वनबेला' कविताएँ स्त्री के अधिकार और सम्मान का समर्थन करती हैं। समाज में स्त्री और पुरुषों के लिए अलग-अलग मानदंड रखे गए हैं। 'वनबेला' कविता में उन्होंने विवाह विषयक सामाजिक रूढ़ियों का चित्रण किया है। 'सरोज समृति' में भी समाज में स्त्रियों की दोयम स्थिति, उनकी उपेक्षा, विवाह के समय वर-पक्ष का स्थान वधू-पक्ष से उच्च मानने की परंपरा इत्यादि का अत्यंत निकट से सजीव चित्रण किया है। उन्होंने 'नयी बहू की आँखें' कविता के माध्यम से कृषक नारी के व्यक्तित्व को साकार किया है। 'सम्राट एडवर्ड अष्टम के प्रति' रचना में नारी प्रेम के आदर्श की प्रतिष्ठा की गई है। निराला की प्रगतिशील चेतना वर्ग संघर्ष, समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व लैंगिक विभेद को दूर करने का एक सफल व सशक्त प्रयास है।